卐 सम्मेदशिखर 卐

टोंक पूजन

शाश्वत सिद्धक्षेत्र सम्मेदशिखर जी

सम्मेदशिखर पूजन

रचयित्री- गणिनीप्रमुख ज्ञानमती माताजी

अथ स्थापना- शंभु छन्द

गिरिवर सम्मेदशिखर पावन,
श्रीसिद्धक्षेत्र मुनिगण वंदित।
सब तीर्थंकर इस ही गिरि से,
होते हैं मुक्तिवधू अधिपति।।
मुनिगण असंख्य इस पर्वत से,
निर्वाण धाम को प्राप्त हुये।
आगे भी तीर्थंकर मुनिगण का,
शिवथल यह मुनिनाथ कहें।।१।।

दोहा

सिद्धिवधू प्रिय तीर्थंकर, मुनिगण तीरथराज।
आह्वानन कर मैं जजूँ, मिले सिद्धिसाम्राज्य।।२।।

ॐ ह्रीं सम्मेदशिखरशाश्वतसिद्धक्षेत्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं सम्मेदशिखरशाश्वतसिद्धक्षेत्र ! अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं सम्मेदशिखरशाश्वतसिद्धक्षेत्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

चाल- नन्दीश्वर पूजा

भव भव में शीतल नीर, जी भर खूब पिया।
नहिं मिटी तृषा की पीर, आखिर ऊब गया।।
सम्मेदशिखर गिरिराज, पूजूँ मन लावके।
पा जाऊँ निज साम्राज्य, तीरथ गुण गाके।।१।।

ॐ ह्रीं विंशतितीर्थंकरअसंख्यमुनिगणसिद्धिपदप्राप्त सम्मेदशिखरशाश्वतसिद्धक्षेत्राय जलं.....।

भव भव में त्रयविध ताप, अतिशय दाह करे,
चंदन से पूजत आप, अतिशय शांति भरे।।
सम्मेद.।।२।।

ॐ ह्रीं विंशतितीर्थंकरअसंख्यमुनिगणसिद्धिपदप्राप्त सम्मेदशिखरशाश्वतसिद्धक्षेत्राय चंदनं.....।

हे नाथ ! सर्वसुखहेतु, सबकी शरण लिया।
अब अक्षय सुख के हेतु, तुम पद पुंज किया।।
सम्मेद.।।३।।

ॐ ह्रीं विंशतितीर्थंकरअसंख्यमुनिगणसिद्धिपदप्राप्त सम्मेदशिखरशाश्वतसिद्धक्षेत्राय अक्षतं.....।

बहु वर्ण वर्ण के फूल, चरण चढ़ाऊँ मैं।
मिल जाये भवदधिकूल, समसुख पाऊँ मैं।।
सम्मेद.।।४।।

ॐ ह्रीं विंशतितीर्थंकरअसंख्यमुनिगणसिद्धिपदप्राप्त सम्मेदशिखरशाश्वतसिद्धक्षेत्राय पुष्पं.....।

बरफी पेड़ा पकवान, नित्य चढ़ाऊँ मैं।
हो क्षुधा व्याधि की हान, निजसुख पाऊँ मैं।।
सम्मेद.।।५।।

ॐ ह्रीं विंशतितीर्थंकरअसंख्यमुनिगणसिद्धिपदप्राप्त सम्मेदशिखरशाश्वतसिद्धक्षेत्राय नैवेद्यं.....।

कर्पूरज्येति उद्योत, आरति करते ही।
हो ज्ञानज्योति उद्योत, भ्रम तम विनशे ही।।
सम्मेद.।।६।।

ॐ ह्रीं विंशतितीर्थंकरअसंख्यमुनिगणसिद्धिपदप्राप्त सम्मेदशिखरशाश्वतसिद्धक्षेत्राय दीपं.....।

वर धूप अग्नि में खेय, कर्म जलाऊँ मैं।
जिनपद पंकज को सेयै, सौख्य बढ़ाऊँ मैं।।
सम्मेद.।।७।।

ॐ ह्रीं विंशतितीर्थंकरअसंख्यमुनिगणसिद्धिपदप्राप्त सम्मेदशिखरशाश्वतसिद्धक्षेत्राय धूपं.....।

लेकर बहुफल की आश, बहुत कुदेव जजे।
अब एक मोक्षफल आश, फल से तीर्थ जजें।।
सम्मेद.।।८।।

ॐ ह्रीं विंशतितीर्थंकरअसंख्यमुनिगणसिद्धिपदप्राप्त सम्मेदशिखरशाश्वतसिद्धक्षेत्राय फलं.....।

वरअर्घ रजत के फूल, लेकर नित्य जजूँ।
होवे त्रिभुवन अनुकूल, तीरथराज जजूँ।।
सम्मेद.।।९।।

ॐ ह्रीं विंशतितीर्थंकरअसंख्यमुनिगणसिद्धिपदप्राप्त सम्मेदशिखरशाश्वतसिद्धक्षेत्राय अर्घ्यं.....।

दोहा

झरने का अतिशीत जल, शांतीधार करंत।
त्रिभुवन में हो सुख अमल, सर्वशांति विलसंत।।१०।।

शांतये शांतिधारा।

हर सिंगार गुलाब ले, तीर्थराज को नित्य।
पुष्पांजलि चढ़ावते, मिले सर्वसुख इत्य।।११।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक टोंक अर्घ

सोरठा

तीर्थराज सुर वंद्य, पूजत निज सुख संपदा।
मिले ज्ञान आनंद, पुष्पांजलि कर मैं जजूँ।।१।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री सम्मेद शिखर टोंक पूजन

सिद्धवर कूट नं. १(शुभ छन्द)

श्री अजितनाथ जिन कूट सिद्धवर
से निर्वाण पधारे हैं।
उन संघ हजार महामुनिगण,
हन मृत्यू मोक्ष सिधारे हैं।।
इससे ही एक अरब अस्सी,
कोटी अरु चौवन लाख मुनी।
निर्वाण गये सबको पूजूँ,
मैं पाऊँ निज चैतन्य मणी।।

दोहा

भाव सहित इस टोंक की, करूँ वंदना आज।
बत्तिस कोटि उपवास फल, अनुक्रम से निज राज्य।।१।।

ॐ ह्रीं सिद्धवरकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

धवल कूट नं. २

श्री संभव जिनवर धवलकूट से,
हजार मुनिसह मोक्ष गये।
इससे नौ कोड़िकोड़ि बाहत्तर,
लाख बियालिस हजार ये।।
मुनि पाँच शतक मुनिराज सर्व,
निर्वाण धाम को प्राप्त किये।
इन सबके चरण कमल पूजूँ,
निजज्ञान ज्योति हो प्रगट हिये।।

दोहा

भाव सहित इस टोंक की, करूँ वंदना आज।
ब्यालिस लाख उपवास फल, अनुक्रम से शिवराज्य।।२।।

ॐ ह्रीं धवलकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित सम्भव नाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

आनन्द कूट नं. ३

अभिनंदन जिन आनंद कूट से,
हजार मुनिसह सिद्ध बने।
बाहत्तर कोड़िकोड़ि सत्तर,
कोटि मुनि सत्तर लाख बने।।

ब्यालीस सहस अरु सातशतक,
मुनि यहाँ से मोक्ष पधारे हैं।
इन सबके चरण कमल वंदूँ,
ये सबको भवदधि तारे हैं।।

दोहा

भाव सहित इस टोंक की, करूँ वंदना नित्य।
एक लाख उपवास फल, मिले स्वात्म सुख नित्य।।३।।

ॐ ह्रीं आनन्दकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित अभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

अविचल कूट नं. ४

श्री सुमतिनाथ अविचल सुकूट से,
सहस साधु सह मोक्ष गये।
इक कोड़ि कोड़ि चौरासि कोटि,
बाहत्तर लाख महामुनि ये।।
इक्यासी सहस सात सौ,
इक्यासी मुनि इससे मोक्ष गये।
इन सबके चरण कमल पूजूँ,
हो शांति अलौकिक प्रभो ! हिये।।

दोहा

भाव सहित इस टोंक की, करूँ वंदना आज।
एक कोटि बत्तीस लख, मिले सुफल उपवास।।४।।

ॐ ह्रीं अविचलकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहितसुमति नाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

मोहन कूट नं. ५

श्री पद्म प्रभू मोहन सुकूट से,
तीन शतक चौबिस मुनिसह।
निर्वाण पधारे आत्मसुधारस,
पीते मुक्ति वल्लभा सह।।
इससे निन्यानवे कोटि सत्यासी,
लाख तेतालिस सहस तथा।
मुनि सातशतक सत्ताइस सब,
शिव पहुँचे पूजत हरूँ व्यथा।।

दोहा

जो वंदे इस टोंक को, स्वर्ग मोक्ष फल लेय।
एक कोटि उपवास फल, तत्क्षण उन्हें मिलेय।।५।।

ॐ ह्रीं मोहनकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहितपद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

प्रभास कूट नं. ६

जिनवर सुपार्श्व सुप्रभासकूट से,
पाँच शतक मुनि साथ लिये।
उनचास कोटिकोटि चौरासी,
कोटि सुबत्तिस लाखसु ये।।
मुनि सात सहस सात सौ ब्यालिस,
कर्मनाश शिवनारि वरी।
मैं सबके चरण कमल पूजूँ,
मेरी होवे शुभ पुण्य घड़ी।।

दोहा

भाव सहित इस टोंक की, करूँ वंदना आज।
बत्तिस कोटि उपवास फल, मिले मोक्ष सुख राज्य।।६।।

ॐ ह्रीं प्रभासकूटात्सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहितसुपार्श्व नाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

ललित कूट नं. ७

श्री चंद्रनाथ निज ललितकूट से,
सहस मुनी सह मोक्ष गये।
इससे नव सौ चौरासि अरब,

बाहत्तर कोटि अस्सि लख ये।।
चौरासि हजार पाँच सौ पंचानवे,
साधुगण सिद्ध हुये।
इनके चरणों में बार-बार,
प्रणमूँ शिव सुख की आश लिये।।

दोहा

भाव सहित इस टोंक की, करूँ वंदना आज।
छ्यानवे लाख उपवास फल, मिले सरें सब काज।।७।।

ॐ ह्रीं ललितकूटात्सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहितचन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

सुप्रभ कूट नं. ८

श्री पुष्पदंत सुप्रभ सुकूट से,
सहस साधु सह सिद्ध हुये।
इससे ही इक कोड़ा कोड़ी,
निन्यानवे लाख महामुनि ये।।
पुनि सात सहस चार सौ अस्सी,
मुनी मोक्ष को पाये हैं।
मैं पूजूँ अर्घ चढ़ाकर के,
ये गुण अनंत निज पाये हैं।

दोहा

भाव सहित इस टोंक को, जो वंदे कर जोड़।
एक कोटि उपवास फल, लहें विघ्न घनतोड़।।८।।

ॐ ह्रीं सुप्रभकूटात्सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहितपुष्पदंत नाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

विद्युत्वर कूट नं. ९

श्री शीतल जिनविद्युत सुकूट से,
सहस साधुसह मोक्ष गये।
इससे अठरा कोड़ा कोड़ी,
ब्यालीस कोटि साधु गण।।
बत्तीस लाख ब्यालिस हजार,
नव शतक पाँच मुनि मोक्ष गये।
इनके चरणारविंद पूजूँ,
परमानंद सुख की आश लिये।।

दोहा

भाव सहित इस टोंक की , करूँ वंदना आज।
एक कोटि उपवास फल, क्रम से निज साम्राज्य।।९।।

ॐ ह्रीं विद्युत्वरकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहितशीतल नाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

संकुल कूट नं. १०

श्रेयांस प्रभू संकुल सुकूट से,
एक सहस मुनि के साथे।
निर्वाण पधारे परम सौख्य को,
प्राप्त किया भवरिपु घाते।।
इससे छ्यानवे कोटिकोटि,
छ्यानवे कोटि छ्यानवे लक्ष।
नव सहस पाँच सौ ब्यालिस मुनि,
शिव गये जजूँ कर चित्त स्वच्छ।।

दोहा

भाव सहित इस टोंक की, करूँ वंदना आज।
एक कोटि उपवास फल, मिले पुनः शिवराज।।१०।।

ॐ ह्रीं संकुलकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहितश्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

सुवीर कूट नं. ११

श्री विमल जिनेंद्र सुवीर कूट से,
छह सौ मुनि सह सिद्ध हुये।
इससे सत्तर कोड़ा कोड़ी अरु,
साठ लाख छह सहस हुये।।
मुनि सात शतक ब्यालिस मुनी,
सब कर्मनाश शिवधाम गये।
उन सबके चरण कमल पूजूँ,
मेरे सब कारज सिद्ध भये।।

दोहा

भाव सहित इस टोंक की, करूँ वंदना आज।
एक कोटि उपवास फल, क्रम से शिव साम्राज्य।।११।।

ॐ ह्रीं सुवीरकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहितविमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

स्वयंभू कूट नं. १२

वर कूट स्वयंभू से अनंत जिन,
निज अनंत पद प्राप्त किया।

उन साथ सात हज्जार साधु ने,
कर्मनाश निज राज्य लिया।।
इससे छ्यानवे कोटिकोटि,
सत्तर करोड़ मुनि मोक्ष गये।
पुनि सत्तर लाख सत्तर हजार,
अरु सात शतक मुनि मुक्त भये।।

दोहा

भाव सहित इस टोंक की, करूँ वंदना आज।
नव करोड़ उपवास फल, क्रम से शिव साम्राज्य।।१२।।

ॐ ह्रीं स्वयंभूकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहितअनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

सुदत्त कूट नं. १३

श्री धर्मनाथ जिन सुदत्त कूट से,
कर्मनाश कर मोक्ष गये ।
उनके साथ आठ सौ इक मुनि,
पूर्ण सौख्य पा मुक्त भये ।।
उससे उनतिस कोड़ा कोड़ी,
उन्निस कोटी साधू पूजूँ।

नौ लाख नौ सहस सात शतक,
पंचानवे मुक्त गये पूजूँ।।

दोहा

भाव सहित इस टोंक की, करूँ वंदना नित्य।
एक कोटि उपवास फल, क्रम से अनुपम सिद्धि।।१३।।

ॐ ह्रीं सुदत्तकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहितधर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

कुंद प्रभ कूट नं. १४

श्री शांतिनाथ जिन कुंद कूट से,
नव सौ मुनि सह मुक्ति गये।
नव कोटि कोटि नव लाख तथा,
नव सहस व नौ सौ निन्यानवे।।
इस ही सुकूट से मोक्ष गये,
इन सबके चरण कमल वंदूँ।
प्रभु दीजे परम शांति मुझको,
मैं शीघ्र कर्म अरि को खंडूँ।।

दोहा

भाव सहित इस टोंक की, करूँ वंदना नित्य।
एक कोटि उपवास फल, मिले ज्ञान सुख नित्य।।१४।।

ॐ ह्रीं कुंदप्रभकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहितशांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

ज्ञानधर कूट नं. १५

शंभु छन्द

श्री कुंथुनाथ जिन कूट ज्ञानधर,
से निर्वाण पधारे हैं।
उन साथ में इक हजार साधू,
सब कर्मनाश गुणधारे हैं।।
इससे छ्यानवे कोड़ा कोड़ी,
छ्यानवे कोटि बत्तीस लाख।
छ्यानवे सहस सात सौ ब्यालिस,
शिव पहुँचे मुनि पूजूँ आज।।

दोहा

भाव सहित इस टोंक को, जो वंदे सिर नाय।
एक कोटि उपवास फल, लहे स्वात्मनिधि पाय।।१५।।

ॐ ह्रीं ज्ञानधरकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहितश्रीकुंथु नाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

नाटक कूट नं. १६

श्री अरहनाथ नाटक सुकूट से,
सहस साधु सह मुक्ति गये।
इस ही से निन्यानवे कोटि,
निन्यानवे लाख महामुनि ये।।
नव सौ निन्यानवे सर्व साधु,
निर्वाण पधारे पूजूँ मैं।
सम्यक्त्व कली को विकसित कर,
संपूर्ण दुःखों से छूटूँ मैं।।

दोहा

भाव सहित इस टोंक की, करूँ वंदना आज।
छ्यानवे कोटि उपवास फल, पाय लहूँ निजराज।।१६।।

ॐ ह्रीं नाटककूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहितअरनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

संबल कूट नं. १७

श्री मल्लिनाथ संबल सुकूट से,
मोक्ष गये सब कर्म हने।
मुनि पाँच शतक प्रभु साथ मुक्ति को,
प्राप्त किया गुण पाय घने।।
इस ही से छ्यानवे कोटि महामुनि,
सर्व अघाती घाता था।
मैं परमानंदामृत हेतू
इन पूजूँ गाऊँ गुण गाथा।

दोहा

भाव सहित इस टोंक को , वंदूँ बारंबार।
एक कोटि प्रोषधमयी, फल उपवास जु सार।।१७।।

ॐ ह्रीं संबलकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहितमल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

निरजर कूट नं. १८

श्री मुनिसुव्रत निर्जरसुकूट से,
सहस साधु सह मुक्ति गये।
इससे निन्यानवे कोटिकोटि,
सत्यानवे कोटि महामुनि ये।।

नौ लाख नौ सौ निन्यानवे सब,
मुनिराज मोक्ष को प्राप्त हुये।
हम इनके चरणों को पूजें,
निज समतारस पीयूष पियें।।

दोहा

कोटि प्रोषध उपवास फल, टोंक वंदते जान।
क्रम से सब सुख पायके, अंत लहें निर्वाण।।१८।।

ॐ ह्रीं निर्जरकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहितमुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

मित्रधर कूट नं. १९

शंभु छंद

नमिजिनवर कूट मित्रधर से,
इक सहस साधु सहमुक्ति गये।
इससे नव सौ कोड़ाकोड़ी,
इक अरब लाख पैंतालिस ये।।
मुनि सात सहस नौ सौ ब्यालिस,
सब सिद्ध हुए उनको पूजूँ।
निज आत्म सुधारस पान करूँ,
दुःख दारिद संकट से छूटूँ।।

दोहा

भाव सहित इस टोंक की, करें वंदना भव्य।
एक कोटि उपवास फल, लहें नित्य सुख नव्य।।१९।।

ॐ ह्रीं मित्रधरकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहितनमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

सुवर्णभद्र कूट नं. २०

श्री पार्श्व सुवर्णभद्र कूट से,
छत्तिस मुनि सह मुक्ति गये।
इससे ही ब्यासी कोटि चुरासी,
लाख सहस पैंतालिस ये।।
पुनि सात शतक ब्यालीस मुनी,
सब कर्मनाश शिवधाम गये।
उन सबको पूजूँ भक्ती से,
इससे मनवांछित पूर्ण भये।।

दोहा

भाव सहित इस टोंक को, वंदूँ बारंबार।
सोलह कोटि उपवास फल, मिले भवोदधि पार।।२०।।

ॐ ह्रीं सुवर्णभद्रकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहितपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

ऋषभदेव भगवान की टोंक नं. २१

(शेर छन्द)

कैलाशगिरि से ऋषभदेव मुक्ति पधारे।
उन साथ मुनि दस हजार मोक्ष सिधारे।।
मैं बार बार प्रभूपाद वंदना करूँ।
निजात्म तत्त्व ज्ञानज्योति से हृदय भरूँ।।२१।।

ॐ ह्रीं कैलाशपर्वतात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित श्री ऋषभदेवजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।

वासुपूज्य भगवान की टोंक नं. २२

चंपापुरी से वासुपूज्य मोक्ष गये हैं।
उन साथ छह सौ एक साधु मुक्त भये हैं।।
इनके पदारविंद को मैं भक्ति से नमूँ।
निज सौख्य अतीन्द्रिय लहूँ संसार सुख वमूँ।।२२।।

ॐ ह्रीं चंपापुरीक्षेत्रात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहितवासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

नेमिनाथ भगवान की टोंक नं. २३

गिरनार से नेमी प्रभू निर्वाण गये हैं।
शंबू प्रद्युम्न आदि मुनि मुक्त भये हैं।।

ये कोटि बाहत्तर व सात सौ मुनी कहे।
इन सबकी वंदना करूँ ये सौख्यप्रद कहे।।२३।।

ॐ ह्रीं ऊर्जयंतगिरिक्षेत्रात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहितनेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

भगवान महावीर की टोक नं. २४

पावापुरी सरोवर से वीरप्रभू जी।
निज आत्म सौख्य पाया निर्वाण गये जी।।
इनके चरण कमल की मैं वंदना करूँ।
संपूर्ण रोग दुःख की मैं खंडना करूँ।।२४।।

ॐ ह्रीं पावापुरीसरोवरात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

गणधर कूट नं. २५

चौबीस जिनेश्वर के गणीश्वर उन्हें जजूँ।
चौदह शतक उनसठ[१] कहे उन सबको मैं भजूँ।।
ये सर्व ऋद्धिनाथ रिद्धिसिद्धि प्रदाता।
मैं अर्घ चढ़ाके जजूँ ये मुक्ति प्रदाता।।२५।।

ॐ ह्रीं वृषभसेनादिगौतमान्त्य सर्वगणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं.....।

१- तिलोयपण्णत्ति के आधार पर।

शंभु छंद

नंदीश्वर द्वीप बना कृत्रिम,
उसमें बावन जिनमंदिर हैं।
इनमें जिन प्रतिमायें मनहर,
उनकी पूजा सब सुखकर हैं।।
मैं पूजूँ अर्घ चढ़ाकर के,
संसार भ्रमण का नाश करूँ।
निज आत्म सुधारस पीकरके,
निज में ही स्वस्थ निवास करूँ।।२६।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं.....।

तीर्थंकर का शुभ समवसरण,
अतिशायी सुंदर शोभ रहा।
श्री गंधकुटी में तीर्थंकर प्रभु,
राज रहें मन मोह रहा।
मैं पूजूँ अर्घ चढ़ाकरके,
तीर्थंकर को जिनबिंबों को।
सब रोग शोक दारिद्र हरूँ,
पा जाऊँ निज गुणरत्नों को।।२७।।

ॐ ह्रीं समवसरणस्थितसर्वजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं.....।

पूर्णार्घ-शंभु छन्द

गिरिवर सम्मेद शिखर से ही,
अजितादि बीस तीर्थंकर जिन।
निज के अनन्त गुण प्राप्त किये,
मैं उन्हें नमूँ पूजूँ निशदिन।।
यह ही अनादि अनिधन चौबीसों,
जिनवर की निर्वाण भूमि।
मुनि संख्यातीत मुक्तिथल हैं,
पूजत मिलती निर्वाण भूमि।।१।।

ॐ ह्रीं त्रैकालिक सर्वतीर्थंकरमुनिगणसिद्धपदप्राप्तसम्मेद शिखरशाश्वतसिद्धक्षेत्राय पूर्णार्घ्यं.....।

जाप्य-ॐ ह्रीं अर्हं श्रीअनन्तानन्तप्रमसिद्धेभ्यो नमो नमः।

जयमाला

दोहा

चिन्मूरति चिंतामणि, चिन्मय ज्योती पुंज।
गाऊँ गुणमणिमालिका, चिन्मय आतमकुंज।।१।।

शंभु छन्द

जय जय सम्मेदशिखर पर्वत,
जय जय अतिशय महिमाशाली।
जय अनुपम तीर्थराज पर्वत,
जय भव्य कमल दीधितमाली।।
जय कूट सिद्धवर धवलकूट,
आनंदकूट अविचलसुकूट।
जय मोहनकूट प्रभासकूट,
जय ललितकूट जय सुप्रभकूट।।२।।
जय विद्युत संकुलकूट
सुवीरकूट स्वयंभूकूट वंद्य।
जय जय सुदत्तकूट शांतिप्रभ,
कूट ज्ञानधरकूट वंद्य।।
जय नाटक संबलकूट व निर्जर,
कूट मित्रधरकूट वंद्य।
जय पार्श्वनाथ निर्वाणभूमि,
जयसुवरणभद्रसुकूट वंद्य।।३।।
जय अजितनाथ संभव अभिनंदन,

सुमति पद्मप्रभ जिन सुपार्श्व।
चंदाप्रभु पुष्पदंत शीतल,
श्रेयांस विमल व अनंतनाथ।।
जय धर्म शांति कुंथू अरजिन,
जय मल्लिनाथ मुनिसुव्रत जी।
जय नमि जिन पार्श्वनाथ स्वामी,
इस गिरि से पाई शिवपदवी।।४।।
कैलाशगिरी से ऋषभदेव,
श्री वासुपूज्य चंपापुरि से।
गिरनारगिरी से नेमिनाथ,
महावीर प्रभू पावापुरि से।।
निर्वाण पधारे चउ जिनवर,
ये तीर्थ सुरासुर वंद्य हुए।
हुंडावसर्पिणी के निमित्त ये,
अन्यस्थल से मुक्त हुए।।५।।
जय जय कैलाशगिरी चंपा,
पावापुरि ऊर्जयंत पर्वत।
जय जय तीर्थंकर के निर्वाणों,

से पवित्र यतिनुत पर्वत।।
जय जय चौबीस जिनेश्वर के,
चौदह सौ उनसठ गुरु गणधर।
जय जय जय वृषभसेन आदी,
जय जय गौतम स्वामी गुरुवर।।६।।
सम्मेदशिखर पर्वत उत्तम,
मुनिवृंद वंदना करते हैं।
सुरपति नरपति खगपति पूजें,
भविवृंद अर्चना करते हैं।।
पर्वत पर चढ़कर टोंक टोंक पर,
शीश झुकाकर नमते हैं।
मिथ्यात्व अचल शतखंड करें ,
सम्यक्त्वरत्न को लभते हैं।।७।।
इस पर्वत की महिमा अचिन्त्य,
भव्यों को ही दर्शन मिलते।
जो वंदन करते भक्ती से,
कुछ भव में ही शिवसुख लभते।।
बस अधिक उनंचास भव धर,

निश्चित ही मुक्ती पाते हैं।
वंदन से नरक पशू गति से,
बचते निगोद नहिं जाते हैं।।८।।
दस लाख व्यंतरों का अधिपति,
भूतकसुर इस गिरि का रक्षक।
यह यक्षदेव जिनभाक्तिक जन,
वत्सल हैं जिनवृष का रक्षक।।
जो जन अभव्य हैं इस पर्वत का,
वंदन नहिं कर सकते हैं।
मुक्ती गामी निजसुख इच्छुक,
जन ही दर्शन कर सकते हैं।।९।।
यह कल्पवृक्ष सम वांछितप्रद,
चिंतामणि चिंतित फल देता।
पारसमणि भविजन लोहे को,
कंचन क्या पारस कर देता।।
यह आत्म सुधारस गंगा है,
समरससुखमय शीतल जल युत।
यह परमानंद सौख्य सागर,

यह गुण अनंतप्रद त्रिभुवन नुत।।१०।।
मैं नमूँ नमूँ इस पर्वत को,
यह तीर्थराज है त्रिभवुन में।
इसकी भक्ती निर्झरणी में,
स्नान करूँ अघ धो लूँ मैं।।
अद्भुत अनंत निज शांती को,
पाकर निज में विश्राम करूँ।
निज 'ज्ञानमती' ज्योती पाकर,
अज्ञान तिमिर अवसान करूँ।।११।।

दोहा

नमूँ नमूँ सम्मेद गिरि, करूँ मोह अरि विद्ध।
मृत्युंजय पद प्राप्त कर, वरूँ सर्वसुख सिद्धि।।१२।।

ॐ ह्रीं त्रैकालिकसर्वतीर्थंकरमुनिगणसिद्धपदप्राप्त सम्मेदशिखरशाश्वतसिद्धक्षेत्राय जयमाला अर्घ्यं.....।
शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

गीता छन्द

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से,
सम्मेदगिरि को वंदते।
वे नरक पशु गति से छुटें,
सुरपद धरें आनंदते।।
चक्रीश पद तीर्थेश पद,
पाकर अतुल वैभव धरें।
फिर ''ज्ञानमति'' रवि किरण से,
त्रिभुवन कमल विकसित करें।।१।।

इत्याशीर्वादः।

❖ ❖ ❖

सम्मेदशिखर की वन्दना करते समय निम्नलिखित मंत्र का जाप्य करने से यात्रा निर्विघ्न सम्पन्न हो जाती है तथा तीर्थराज सम्मेदशिखर के दर्शन की भावना होने पर घर में भी इस मंत्र का जाप करना चाहिए।

जाप्य- **ॐ ह्रीं अनन्तानन्तप्रमसिद्धेभ्यो नमो नमः।**

सर्वशांतिमंत्र- **ॐ ह्रीं अर्हं असि आ उ सा नमः सर्वविघ्नशांतिम् कुरू कुरू स्वाहा।**

सर्वसिद्धिमंत्र- **ॐ ह्रीं नमः।**

सम्मेदशिखर चालीसा

रचयित्री–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

दोहा

सिद्धिप्रिया की प्राप्ति हित, नमन करूँ सब सिद्ध।
क्रम से भव को काटकर, होऊँ पूर्ण समृद्ध।।१।।
सिद्धक्षेत्र शाश्वत कहा, गिरि सम्मेद महान।
जहां अनन्तानंत प्रभु, ने पाया शिवधाम।।२।।
सम्मेदाचल तीर्थ का, चालीसा सुखकार।
पढ़े सुने जो भव्यजन, क्रम से हो भव पार।।३।।

चौपाई

जय हो श्री सम्मेद शिखर की,
जय हो उस शाश्वत गिरिवर की।।१।।
हों जयवन्त बीस ये जिनवर,
सिद्ध बने थे जो तीर्थंकर।।२।।
इस हुण्डावसर्पिणी युग में,

चार जिनेश्वर अन्य स्थल से।।३।।
मोक्ष प्राप्त कर सिद्ध बन गए,
वे तीरथ भी पूज्य बन गए।।४।।
लेकिन भूत भावि कालों में,
यहीं से मुक्त हुए अरु होंगे।।५।।
यही अटल सिद्धान्त नियम है,
सिद्धिवधू का यह उपवन है।।६।।
कोड़ाकोड़ि मुनीश्वर आते,
इस पर्वत पर ध्यान लगाते।।७।।
टोंक-टोंक से मोक्ष पधारे,
घाति अघाती कर्म विडारे।।८।।
इसलिए गिरी की रजपावन,
है वहाँ का कण-कण मनभावन।।९।।
यात्रा यद्यपि बहुत कठिन है,
यात्री होता फिर भी धन्य है।।१०।।
थक थककर भी चढ़ जाता है,
अपनी मंजिल पा जाता है।।११।।
पार्श्वनाथ की टोंक पे जाकर,

प्रभु के सम्मुख शीश झुकाकर।।१२।।
जन्म सफल कर लेता मानव,
दूर हटें दुर्गति के दानव।।१३।।
मन्दिर कई बने पर्वत पर,
जिनमें इक प्रसिद्ध जलमन्दिर।।१४।।
थका पथिक कुछ देर बैठकर,
करता है विश्राम वहाँ पर।।१५।।
फिर यात्रा पर चल देता है,
यात्रा का फल वर लेता है।।१६।।
पर्वत का प्राकृतिक दृश्य भी,
बड़ा मनोरम सुखद सत्य ही।।१७।।
सीता नाला है इक झरना,
जहाँ एक क्षण सबको रुकना।।१८।।
शीतल जल से पग धो लेना,
यदि शक्ती वापस हो लेना।।१९।।
एक ओर गन्धर्व है नाला,
बहता झर-झर झरना प्यारा।।२०।।
उतर-उतर कर यात्री आते,

स्वल्पाहार प्रसाद को पाते।।२१।।
बच्चे-बूढ़े सब लेते हैं,
दान स्वरूप द्रव्य देते हैं।।२२।।
एक वन्दना करके भी वे,
तीन, पाँच, नौ भी कर लेवें।।२३।।
शतक सहस्त्र वन्दना वाले,
कुछ मुनि श्रावक भक्त बखाने।।२४।।
उनकी काया सुदृढ़ बनी है,
भावों की माया सुघनी है।।२५।।
इस पर्वत की महिमा न्यारी,
कही पूर्व ऋषियों ने भारी।।२६।।
एक बार वन्दे जो कोई,
तांहि नरक पशुगति नहिं होई।।२७।।
भव्यजीव ही जा सकते हैं,
पर्वत वन्दन कर सकते हैं।।२८।।
नहिं अभव्य पर्वत चढ़ सकते,
शास्त्र जिनागम ऐसा कहते।।२९।।
मोक्षगमन की शक्ति जहाँ है,

भव्य शक्ति का वास वहाँ है।।३०।।
चाहे वह कितने ही भव में,
कर्मनाश कर पहुंचे शिव में।।३१।।
किन्तु अभव्य न शिवपद पाते,
निज अभव्य शक्ति के नाते।।३२।।
ये परिणामिक भाव जीव के,
होते हैं स्वयमेव जीव में।।३३।।
वर्तमान में भी वह तीरथ,
जिनमत की कहता है कीरत।।३४।।
पर्वत के नीचे भी मंदिर,
बने अनेकों अद्भुत सुन्दर।।३५।।
कई धर्मशालाएं भी हैं,
यात्री को सुविधाएं भी हैं।।३६।।
श्रावण सुदि सप्तमी का मेला,
होता है वहां खूब रंगीला।।३७।।
होली पर भी मधुवन जाना,
होली का देखो नजराना।।३८।।

सांवरिया का नाम पुकारो,
पारस का जयकार उचारो।।३९।।
तुम भी पारस बन जाओगे,
भक्ती का रस पा जाओगे।।४०।।

दोहा

चालीस दिन तक जो करे, नित चालीसहिं बार।
मिले सहस उपवास फल, सुख सम्पत्ति अपार।।१।।
गणिनी माता ज्ञानमति, बालसती विख्यात।
उनकी शिष्या चन्दनामती रचित यह पाठ।।२।।
सुगन्ध दशमी भाद्रपद, की तिथि है सुप्रसिद्ध।
वीर संवत् पच्चीस सौ, तेइस की कृति सिद्ध।।३।।
जब तक गिरि सम्मेद का, जग में रहे प्रकाश।
चालीसा यह तीर्थ का, तन मन करे विकास।।४।।
सिद्धों की उस श्रेणी में, आए मेरा नाम।
सिद्धक्षेत्र की भक्ति से, मिले मुझे शिवधाम।।५।।

❖❖❖

भजन

तर्ज- ऐ मेरे वतन के लोगों.....

भारत के जैनी वीरों, तुम सुन लो कथा पुरानी।
सम्मेदशिखर पर्वत है, सिद्धों की अमिट निशानी।।
इक नहीं अनन्तों जिनवर, साकेतपुरी में जन्मे।
सम्मेदशिखर से शिवपद, पा सिद्धशिला पर पहुँचे।।
उस रज को सिर पर धर लो, जो कहती अमर कहानी।
सम्मेदशिखर पर्वत है, सिद्धों की अमिट निशानी।।१।।
बन करके दिगम्बर मुनिवर, इस गिरि पर ध्यान किया है।
कितनों ने तपस्या करके, कर्मों का नाश किया है।।
उन सब सिद्धों को नम लो, जो बने आत्म श्रद्धानी।
सम्मेदशिखर पर्वत है, सिद्धों की अमिट निशानी।।२।।

यह सिद्धक्षेत्र जिनवर का, जैनी इसके अधिकारी।
इसका दर्शन वन्दन है, हर मानव को हितकारी।।
पर्वत को वन्दन कर लो, सब जिनमत के श्रद्धानी।।
सम्मेदशिखर पर्वत है, सिद्धों की अमिट निशानी।।३।।
यह तीर्थ अहिंसा का शुभ, सन्देश सुनाता जग को।
भावों को शुद्ध बनाकर, तिरना सिखलाता सबको।
''चन्दना'' तभी हम सबमें, सार्थक होगी प्रभुवाणी।
सम्मेदशिखर पर्वत है, सिद्धों की अमिट निशानी।।४।।
ये धर्मतीर्थ न कभी भी, बेचे व खरीदे जाते।
हर मानव की श्रद्धा के, ये केन्द्रबिन्दु कहलाते।।
निजमत जिनमत में बदलो, बनकर सच्चे श्रद्धानी।
सम्मेदशिखर पर्वत है, सिद्धों की अमिट निशानी।।५।।

❖❖❖

भजन

तर्ज–फूलों सा चेहरा तेरा.....

शाश्वत है तीरथ मेरा, सम्मेदगिरि नाम है।
गिरिवरों में श्रेष्ठ है, आदि सिद्धक्षेत्र है, मधुबन परम धाम है।
कहते हैं इस गिरि की वन्दना से,
तिर्यंच नरकायु मिलती नहीं है।
श्रद्धा सहित इसकी अर्चना से,
भव्यत्व कलिका खिलती रही है।।
रात अंधेरी हो, भक्ति सहेली हो, लगता न डर पर्वत पर कभी।
अतिशय से गूँजे यहाँ, सांवरिया का नाम है।
गिरिवरों में श्रेष्ठ है, आदि सिद्धक्षेत्र है, मधुवन परम धाम है।।१।।
इस युग के चौबीस तीर्थंकरों में,
मोक्ष गए बीस जिनवर यहाँ से।
कितने करोड़ों मुनियों ने भी,
तप करके शिवालय पाया यहाँ से।।
तीर्थ पुराना है, श्रेष्ठ खजाना है, सबको तिराता है संसार से।
तीरथ की कीरत अमर, कर सकता इंसान है।
गिरिवरों में श्रेष्ठ है, आदि सिद्धक्षेत्र है, मधुवन परम धाम है।२।।
जिनधर्म निधि को पाकर के उसका,
सच्चा सदुपयोग करना है हमको।
आपस में मैत्री, दीनों पे करुणा,
का भाव जग में सिखाना है सबको।।
स्वार्थ त्याग करके, शीघ्र जाग करके, जैनत्व की सब रक्षा करो।
तीरथ की रज ''चन्दना'' मस्तक का परिधान है।
गिरिवरों में श्रेष्ठ है, आदि सिद्धक्षेत्र है, मधुवन परम धाम है।।३।।

❖ ❖ ❖

आरती

मैं तो आरती उतारूँ रे सम्मेद गिरिवर की,
जय जय सम्मेद शिखर जय जय जय-२
कहा शाश्वत है यह गिरिराज,
अनादीकालों से-अनादी कालों से।
मुक्ति वरते यहीं से जिनराज,
अनादी कालों से-अनादी।।
पावन है पूज्य है, गिरिवर की धूल है,
सिर पे चढ़ाओ जी
हो धूली इसकी सिर पे चढ़ाओ जी।।
मैं तो.।।१।।
इस युग के जिनेश्वर बीस,
मुक्त हुए यहीं से-मुक्त..।
बने सिद्ध शिला के ईश,
नमन करूँ रुचि से-नमन....।।
आरती का थाल ले, भक्ति सुमन माल ले,
सबको बुलाऊँ मैं
हो भक्तों की टोली बुलाऊँ मैं ।।
मैं तो.।।२।।
इक बार भी जो वन्दना,
करे इस गिरिवर की-करे....।
उसको मिलती न उस भव से,
नरक अरु पशुगति भी-नरक.....।।
मैं भी इसी भाव से, शुभ गती की चाव से,
भक्ती रचाऊँरे,
हो गिरि पर चढ़ करके जाऊँ रे ।।
मैं. तो.।।३।।
सांवरिया का है चमत्कार, सम्मेदाचल में-सम्मेदा...।
पारस पारस की है पुकार,
आज भी मधुवन में -आज भी....।।
''चन्दनामति'' भक्ति में, आज भी शक्ति है,
उसमें ही रम जाओ
हो गिरि की आरति का फल पाओ।।
मैं तो.।।४।।